Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

निःशस्त्रीकरण और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा

डॉ0 महेश पति त्रिपाठी
प्राचार्य, बाबू रामनरेश सिंह मेमोरियल डिग्री कॉलेज,
कोना–सोनबरसा, बरही, गोरखपुर (उ0प्र0)
सम्बद्ध–दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0)

Article Info
Volume 4 Issue 2
Page Number : 171-176

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 02 March 2021
Published : 15 March 2021

सारांश– 11 सितंबर 2001 को अतांकवाद का प्रलयकारी रूप विश्व के मानसपटल पर हमेशा अंकित रहेगा व अमेरिका के लिए वह विनाशकारी दिन एक सबक की तरह था, कि दूसरों के लिए कुंआ खोदने वाले कभी खुद भी उसमें गिर जाते हैं, ये कहावत अमेरिका पर सही सिद्ध होती है। राष्ट्रपति कैनेडी ने 1961 में कहा था कि इन हथियारों को नष्ट करना ही होगा वरना ये हमें नष्ट कर देंगे एवं यह धरती किसी के जीवित रहने योग्य ही नहीं रह सकेगी। यदि परमाणु युद्ध हुआ तो इस पृथ्वी से मानवता का समूल नाश कर देंगे। यदि यदि युद्ध केवल उतरी गोलार्द्ध में होता है तब भी इसके गंभीर परिणाम सम्पूर्ण विश्व को भुगतने होंगे। विश्व सुरक्षा व शांति के नाम पर विभिन्न प्रकार के हथियारों के ढेर पर बैठा है। यह सही कि उक्त कटौतियों के बावजूद मानव संहार के लिए पर्याप्त परमाणु भण्डार बचे रहेंगे। वर्तमान समय में परमाणु सम्पन्न राष्ट्र निःशस्त्रीकरण को अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक सही कदम मान रहे है, वहीं भारत इस संधि को भेदभाव पूर्ण मान रहा है। भारत का मानना है कि यह संधि न्यायपूर्ण नहीं है। यह योजना तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक इस योजना को पूरी ईमानदारी व वफादारी के साथ न अमल में लाया जाए, इस योजना में कई बाधाएं आ रही है, जिसमें अनुपात की समस्या मुख्य है। इसमें सभी देशों को अपने शस्त्रों का आनुपातिक रूप कम करना होगा, दूसरा राष्ट्रीय हित व सुरक्षा, राजनीतिक समस्याएं है। जब तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति वैचारिक प्रतियोगिता, संकीर्ण राष्ट्रवाद, स्वार्थपूर्ण राष्ट्रीय हितों की सीमा में बंधी है तो निःशस्त्रीकरण संभव नही है।

मुख्य शब्द– निःशस्त्रीकरण, अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद।

"जिनके पास हथियार हैं, उनके दोस्त भी उनसे डरते हैं।" – महात्मा गांधी

द्वितीय विश्व युद्ध का अंतिम चरण जब अमेरिका ने प्रातः काल 5 बजकर 30 मिनट पर 16 जुलाई 1945 को न्यूमेक्सिको की मरूभूमि आलमगारदो से पचास मील दूर पहले परमाणु अस्त्र का विस्फोट किया

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

इस सफल परीक्षण के कुछ दिन पश्चात द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में जापान के दो नगरों हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम छोड़ने के साथ ही विश्व को अस्त्र दौड़ में झोंक दिया। इसके बाद अस्त्रों के निर्माण का सिलसिला अनवरत चलता जा रहा है। विश्व की पांच परमाणु शक्तियां जहां दुनिया को परमाणु अप्रसार की सीख दे रही हैं। परमाणु विषयों की एक अग्रणी अमेरिकी पत्रिका के अनुसार 1945 के बाद दुनियां में कम से कम 2050 के ज्ञात परमाणु परीक्षण हुए हैं। इसमें से 85 प्रतिशत परीक्षण अमेरिका तथा पूर्व सोवियत संघ द्वारा किए गए हैं। स्टकहोम स्थित इण्टरनेशनल पीस रिसर्च इन्स्टीट्यूट (सिपरी) की प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार इजराइल के पास हथियार बनाने लायक पर्याप्त सामग्री है। भारत व पाकिस्तान भी पीछे नहीं हैं। अतः परमाणु अप्रसार व निःशस्त्रीकरण की शुरूआत इन्ही शक्तियों से आरंभ होनी चाहिए। शांति व सुरक्षा के नाम पर बनने वाले हथियार विनाश व तबाही के रूप में तबदील हो गए हैं। उसके बाद अमेरिका ने रूकने का नाम नहीं लिया बल्कि इस दौड़ में सोवियत संघ, फ्रांस, ब्रिटेन व चीन जैसे ताकतवर राष्ट्र भी शामिल हो गए। शस्त्रीकरण की दौड़ ने विश्व सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियां पैदा कर दी थी, वहीं इसका समाधान करना भी एक अत्यंत अनिवार्य विषय बन गया था। द्वितीय विश्व युद्ध से पहले भी निःशस्त्रीकरण पर कई वार्ताएं व सम्मेलन हुए, लेकिन किसी भी योजना व नीति को अमलीजामा नहीं पहनाया गया। कोई भी योजना व नीति तब तक सफल नहीं होती है, जब तक उसपर पूरी तरह से अमल न किया जाए। शांति और सुरक्षा के प्रश्न से ही सम्बंधित निःशस्त्रीकरण का प्रश्न है। इस और सबसे पहला कदम पेरिस के शांति सम्मेलन द्वारा उठाया गया था, जिसके द्वारा जर्मनी, ऑस्ट्रीया व हंगरी आदि की सैनिक शक्ति को कम कर दिया गया था। राष्ट्रसंघ की 8वीं धारा में निःशस्त्रीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया गया था।[1] उस समय विद्वानों ने माना की कोई भी योजना तब तक सफल नही हो सकती जब तक कि वह सबके उपर लागू न की जाए। इसके पश्चात कई रक्षात्मक समझौते किए गए और कई विचारधाराएं आई और गई, लेकिन न तो उनको स्वीकार किया गया और न ही उन्हें व्यवहार में ही लाया गया।

विश्व में होने वाले विनाशकारी युद्धों के पीछे राष्ट्रों में शस्त्रीकरण की होड़ एक प्रमुख कारण रही है। इस सदी के प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध शस्त्रीकरण के फलस्वरूप राष्ट्रों द्वारा शक्तिसन्तुलन की सीमा लांघ जाने की प्रक्रिया या उससे जुड़े भय के कारण भड़क उठे थे। यही कारण है कि निःशस्त्रीकरण द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा को बनाए रखना, समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों में सबसे लोकप्रिय धारणा बनी रही। 1985 का नोबल पुरस्कार उन भौतिक वैज्ञानिकों को दिया गया था, जो शस्त्रों के विरूद्ध, विशेषकर नाभिकीय शस्त्रों के विरूद्ध, मानवीय चेतना को लगाने का प्रयत्न कर रहे थे।[2] यह इस का प्रमाण है कि आज निःशस्त्रीकरण भावी पीढ़ियों को युद्ध की विभीषिका से बचाने के लिए सबसे उत्तम साधन है। यह बात सही है कि शस्त्र युद्ध के साधन होते हैं, इसलिए इनको समाप्त करके युद्ध की सम्भावनाओं को कम किया जा सकता है। इतिहास की तरफ ध्यान दिया जाए तो पता चलता है कि विश्व में जितने भी भयंकर युद्ध हुए है उनका मूल कारण परमाणु शस्त्र ही थे। एक की सदी के भीतर दो विश्व युद्ध, खाड़ी युद्ध व ईरान, इराक युद्ध व अमेरिका द्वारा इराक की तबाही इन्हीं नाभिकीय हथियारों का नतीजा है। यह सभी घटनाएं अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक गंभीर चिंता का विषय है। ऐसे में भविष्य में परमाणु युद्ध की संभावना के कारण अन्तर्राष्ट्रीय शांति व व्यवस्था को बनाए रखना स्थाई चिंता का विषय बन गया है। इसलिए निःशस्त्रीकरण इसका सर्वोत्तम व प्रभावशाली साधन समझे जाते है। निःशस्त्रीकरण युद्ध को रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय शांति, व्यवस्था तथा सुरक्षा के लिए सही साधन माने गए हैं। यह भी सत्य है कि इस ओर उन्ही लोगो का ध्यान गया, जो इस शस्त्रीकरण से जनक व बढ़ावा देने वाले थे। इसलिए विश्व के सभी देश

इनकी इस धारणा से पूर्णतः सहमत नही थे। वे निःशस्त्रीकरण तो चाहते थे, परन्तु वे विकसित देशों द्वारा तैयार की गई नीतियों को भेदभाव पूर्ण मानते थे। इनमें भारत पहले स्थान पर है।

शस्त्रीकरण का आरंभ– प्रारंभ से नाभिकीय हथियार आंतक का उपकरण रहें हैं। इनके निर्माण ने विश्व को भंय व आतंक का वातावरण ही दिया और ये हमेशा दमन के लिए ही इस्तेमाल होते रहे हैं। 7 व 9 अगस्त 1945 में जापान पर गिराए गए वही हथियार आज अमेरिका पर कहर बन कर गिर रहें हैं। यह सत्य है कि तबाही को जन्म देने वाले एक दिन स्वंय तबाह होते हैं। अमेरिका ने जिस शस्त्रीकरण की दौड को आरंभ किया उसे विरासत की तरह अन्य शक्तिशाली राष्ट्रों ने भी अपनाया। किसी ने शांति के नाम पर तो किसी राष्ट्र ने सुरक्षा के नाम पर इस होड़ को जारी रखा। अमेरिकी नाभिकीय परीक्षण व प्रयोग के तीन साल पश्चात 29 अगस्त 1949 में सोवियत संघ ने उत्तरी साइबेरिया में अपना पहला परमाणु बम का परीक्षण किया।[4] सोवियत संघ ने 1954 में परमाणु अस्त्रों को अपने सैन्य सिद्धांत का अंग बना लिया। नाभिकीय यर्थाथवाद के धर्मगुरू हेनरी किसिंजर ने उस समय इस बात पर ऐसी टिप्पणी की– परमाणु क्षेत्र में हमारे एकाधिकार को समाप्त करने में सोवियत संघ की सफलता से रणनीतिक संतुलन पर जितना फर्क पड़ा है उतना फर्क किसी बड़े भूभाग पर कब्जा करने से भी न पड़ता, चाहे वह भूभाग यूरोप ही रहा हो। अमेरिका व सोवियत संघ जैसे महारथियों के अलावा नाभिकीय शक्ति अर्जित करने वाले तीन देश ब्रिटेन, फ्रांस व चीन थे। ब्रिटेन ने अपना पहला सफल परीक्षण 30 अक्टूबर 1952 को आस्ट्रेलिया में किया, जबकि फ्रांस ने 13 फरवरी 1960 को सहारा रेगिस्तान के रेंगरने नामक स्थान पर किया। वहीं चीन ने 16 अक्टूबर 1964 को लापनोर में पहला सफल परमाणु परीक्षण किया। चीन के इस नाभिकीय परीक्षण से एशियाई महाद्वीप ने अपने मध्य एक नाभिकीय दिग्गज को खड़े पाया।[5] चीन द्वारा किया गया परीक्षण एशियाई राष्ट्रों की सुरक्षा के लिए खतरा था। यह भारत की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती थी, क्योंकि भारत 1962 की हार से पहले ही काफी हताहत हो चुका था और चीन न केवल भारत पड़ोसी था, बल्कि उसकी सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा भी था। चीन द्वारा किए गए परीक्षणों का खतरा भारत ज्यादा दिनों तक नहीं झेल पाया और मई 1974 में उसने अपना पहला सफल परमाणु परीक्षण किया तथा दूसरा परीक्षण 11 व 13 मई 1998 को पोखरन नामक स्थान पर करके अपने आप को शक्ति संपन्न घोषित किया। यह सही है कि इस परीक्षण के पीछे भारत की सुरक्षा की भावना थी। कुछ दिनों बाद पाकिस्तान ने छह परमाणु परीक्षण किए, जिनका मकसद भी सुरक्षा ही था। आज एक ओर नाभिकीय हथियार सुरक्षा का विषय बने हुए हैं, वहीं दूसरी ओर विनाश का भी पर्याय बन चुके हैं।[6] सुरक्षा व शान्ति के नाम पर अब तक नाभिकीय अस्त्र – संपन्न राष्ट्रों के पास एक लाख सत्ताईस हजार पांच सौ पैंतालीस नाभिकीय अस्त्र हैं, जिसमें अमेरिका के पास 7,986, रूस के पास 7,612, ब्रिटेन 260, फ्रांस 449 व चीन के पास 395 नाभिकीय हथियार हैं। अगर निरस्त्रीकरण किया गया तो ये हथियार विनाश का कारण भी बन सकते हैं। आज अमेरिका के पास लिटिल बॉय व फैट मैन से भी कई गुणा विनाशकारी व शाक्तिशाली हथियार हैं, जो पृथ्वी के लिए विनाश का कारण बन सकते हैं। यह बात अटल सत्य है, जिन हथियारों प्रयोग से विस्फोटक तबाही होती है, उसके निर्माण व परीक्षण से ग्लोबल वार्मिंग का असर हम देख रहें हैं। विकरण प्रभाव व नाभिकीय शीत से भूमंडलीय जलवायु में होने वाले परिर्वतनों के आसार हम समय–समय पर देखते आ रहें हैं।[7] वैज्ञानिकों का मत है कि अब तक जितने भी नाभिकीय परीक्षण हो चुके हैं और जितनी रेडियोधर्मिता फैल चुकी है, वही मानव जाति के लिए घातक सिद्ध हो रही है। दूसरी तरफ इस शक्ति का एक सृजनकारी रूप भी है। मानव कल्याण के लिए नाभिकीय शक्ति का सृजनात्मक विकास उपयोगी प्रयोग हो सकता है। आज विकसित राष्ट्र अणुचालित बिजलीघरों में सस्ती दर पर विद्युत उत्पादन कर रहे हैं।

निःशस्त्रीकरण की दिशा में किए गए प्रयास – निःशस्त्रीकरण के प्रश्न को लेकर द्वितीय विश्व युद्ध से पहले भी कई वार्ताएं व सम्मेलन हुए, जिनमें 1920 में राष्ट्रसंघ द्वारा स्थाई परामर्श आयोग की स्थापना, 1921 में अस्थाई मिश्रित आयोग, 1922 में परस्पर सहायता की संधि, 1924 में जेनेवा प्रोटोकोल, 1925 में निःशस्त्रीकरण आयोग, 1931 में निःशस्त्रीकरण सम्मेलन लेकिन ये सब प्रयास असफल रहे। इसके अलावा 1921 को वाशिंगटन सम्मेलन, चार शक्तियों का समझौता, जिनमें अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस व जापान शामिल थे, नौ शक्तियों की संधि, 1930 व 1935 में हुए लंदन का सैनिक सम्मेलन, ये सभी प्रयास विफल रहे।[8] हिरोशिमा व नागाशाकी की तबाही व विनाशलीला के पश्चात व द्वितीय युद्ध के उपरांत भी कईं बहुपक्षीय संधियां व समझौतें हुए जिनके नाभिकीय अस्त्रसंपन्न राष्ट्र हस्ताक्षर कर्त्ता थे या हैं। ये संधियां व समझौते इस प्रकार से थे, जिनमें 1959 में अंटार्कटिका संधि, 1963 की आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधि, जिसमें वातावरण, बाह्य आकाश और पानी के भीतर नाभिकीय अस्त्र परीक्षण प्रतिबंध करते हैं। 1967 में चंद्रमा और अन्य गतिविधियों को नियंत्रित करने वाली संधियां, इसके बाद 1968 में एन.पी.टी. 1971 में समुंद्र की सतह, महासागर की सतह और अन्य हथियारों को प्रतिबंध करने वाली संधि या समुद्री सतह से संबंधी संधि, 1980 में नाभिकीय पदार्थों की भौतिक सुरक्षा संबंधी समझौता व 1985 में दक्षिणी प्रशांत को नाभिकीय अस्त्रमुक्त क्षेत्र संधि या राशेटोंगा संधि है। इसके अलावा कई ओर सामरिक व अस्त्र परिसीमन संधिया व समझौते हुए, जिनका फायदा अमीर व परमाणु देशों को शायद इतना नही होता जितना गरीब व शक्तिहीन देशों को नुकसान हो रहा था। इसलिए एशिया के कई देशों ने इस प्रकार के समझौतों व संधियों से हमेशा अपना पल्ला दूर ही रखा। अमेरिका व रूस के ओर भी महत्वपूर्ण समझौते हुए, जिनमें ए. बी. एम. संधि (1972), सामरिक आक्रामक अस्त्र परिसीमन के बारे में अमेरिका और सोवियत संघ के बीच अंतरिम समंझौता या साल्ट समझौता (1972), आई. एन. एफ. संधि (1987), अस्त्र कटौती व परिसीमन की संधि या स्टट–1 संधि (1991), स्टोट–11 (1993) व (1997) में स्टट–111। हेलेंस्की शिखर सम्मेलन में स्टट–3 के लिए वार्ता करने का निर्णय लिया गया। इसके पूर्व 1991 में स्टट–1 के अनुसार दोनों देशों ने सात साल की अवधि में अपने सामरिक अस्त्रों को घटा कर बराबर करने थे। स्टार्ट – द्वितीय संधि में दोनों देश अपने एम.आई.आर., आर. वी. आई.डी. व आई.सी. बी. एम. खत्म कर देंगे और अपने नाभिकीय स्फोटक शीर्ष घटा कर तीन हजार पांच सौ तक कर देगें। ये कटौतियां 1 जनवरी 2003 तक हो जानी थी।[9] आज विश्व में जहां नाभिकीय हथियारों की होड़ लगी हुई है, वहीं दूसरी और इनमें कटौती लाने के लिए अनेकों संधियाँ व समझौतों का निर्माण किया जाता रहा है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण रही– सीटीबीटी, जो 24 सितम्बर 1996 में आरंभ हुई, जिसमें अब तक 148 देशों ने हस्ताक्षर किए हैं।[10] लेकिन भारत ने इस संधि का विरोध करते हुए आज तक इस पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। वह इस संधि को न्यायपूर्ण नहीं मानता है। मौजूदा स्वरूप में सीटीबीटी का विरोध विधिवत दर्ज है। यह संधि, जिसे 24 सितंबर 1996 को संयुक्त राष्ट्र में हस्ताक्षर के लिए रखा गया, अब तक एक सौ अड़तालीस हस्ताक्षर और आठ अभिपुष्टियां प्राप्त कर चुकी है। सीटीबीटी पर हस्ताक्षर से पहले सभी परमाणु शक्ति संपन्न देशों ने अपने सभी परीक्षण पूरे कर लिए थे। छह देशों (मई 1974 में किए गए भारत के भूमिगत परीक्षण को मिलाकर) कुल दो हजार छियालिस ज्ञात नाभिकीय परीक्षणों में से अमेरिका ने एक हजार तीस, सोवियत संघ ने सात सौ पंद्रह परीक्षण, ब्रिटेन ने पैंतालिस परीक्षण, फ्रांस ने दो सौ दस और चीन ने पैंतालिस परीक्षण किए। 1992 में अमेरिकी सांसद लेस एस्पिन ने कहा था– नाभिकीय अस्त्र बड़े समकारी हैं, जिसके माध्यम से अमेरिका ने अपने विरोधियों की सैन्य बढ़त को खत्म कर दिया है। लेकिन अब सोवियत संघ ध्वस्त हो चुका है। और अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी पारंपारिक शक्ति है। इसलिए

अमेरिका को अन्य शक्तियों से बराबरी कायम करने के लिए नाभिकीय हथियार रखने की जरूरत नहीं है। वर्तमान समय में नाभिकीय अस्त्रों से रहित विश्व अमेरिका के लिए घाटे का सौदा नहीं है।[11]

क्या नाभिकीय अस्त्र मुक्त विश्व व्यवहारिक है, यह पता लगाने के लिए कई परियोजनाएं शुरू की गईं। कैनबरा आयोग नाभिकीय हथियारों से पूर्णतः मुक्त विश्व के ठोस और यर्थाथपरक कार्यक्रम का विचार व प्रस्ताव विकसित करने के लिए बनाया गया था। आयोग के बयान में एन. डब्ल्यू. एस. से सभी तरह के नाभिकीय हथियारों से मुक्त होने के अभियान का खुद नेतृत्व करने को कहा गया था। आयुक्तों के स्टेटमेंट आफॅ रिपोर्ट में कहा गया था। नाभिकीय हथियार चंद देशों के पास हैं, जिनका कहना है कि यह हथियार विशिष्ट सुरक्षा लाभ प्रदान करते हैं, फिर भी उसे रखने का अधिकार सिर्फ अपने पास रखना चाहते हैं।

परिणाम – विश्व के समक्ष नाभिकीय अस्त्र प्रसार नाभिकीय आंतकवाद के लिए खतरा बने हुए हैं। आज जिन हथियारों का निर्माण सुरक्षा व प्रगति के नाम पर हो रहा था। सन् 1962 में नाभिकीय शस्त्र विरोधी एक सम्मेलन में नेहरू ने कहा था कि समय सीमित है। अगर आज आप इसपर जल्दी रोक नहीं लगाते तो बाद में इसे रोकना मानव जाति या राष्ट्रों की क्षमता से बाहर हो जाएगा। नाभिकीय हथियारों के निर्माण का सिलसिला आज वह वर्तमान समय में विश्व में नाभिकीय, रसायनिक व जैविक तक पहुंच गया है। आज विश्व के सभी देश इनकी संहारक क्षमता से भयभीत है। इसका परिणाम यह है कि आज के समय अनेक देशों के मध्य विवाद की स्थिति बनी हुई है तो कहीं विनाश का तांडव आतंकवाद के रूप में भी खेला जा रहा है। ऐसे देशों को विकसित देश अपने हथियार निर्यात करते रहते हैं और उनका शस्त्र बजार बढ़ता है। इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ स्ट्रैट्जिक स्ट्डीज की रिर्पोट के अनुसार अन्य देशों की तुलना में अमेरिका हथियारों की ब्रिकी करने में सबसे आगे रहा है। विकासशील देशों में हथियार खरीदने की प्रक्रिया में सऊदी अरब का पहला स्थान है।[12] मिलिट्री बैलेंस 2003–2004 के आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि वर्तमान विश्व शस्त्र बजार 40.3 प्रतिशत क्षेत्र पर अमेरिका का कब्जा है। 18.5 प्रतिशत ब्रिटेन व तीसरे स्थान पर 12. 2 प्रतिशत क्षेत्र पर रूस का कब्जा है। इसके अलावा फ्रांस की बजार में 7.1 प्रतिशत की तथा चीन की 3.1 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। इस तरह विश्व शस्त्र बजार में 80.2 प्रतिशत क्षेत्र पर विकसित राष्ट्रों का कब्जा है। शेष हथियार यूक्रेन, जर्मनी, इटली, इजरायल व ब्राजील सहित अन्य देशों की हिस्सेदारी है। विश्व शस्त्र बजार पर अमेरिकी अधिपत्य सर्वाधिक है। हथियारों का निर्माण करने वाली सबसे ज्यादा कंपनियां भी अमेरिका की ही हैं, इसी मद चूर अमेरिका ने कई मनमानियां की और कई दशों की तबाही का कारण भी बना, लेकिनं हथियारों की इस विनाशलीला से वह भी अछूता नहीं रहा।[13] 11 सितंबर 2001 को अतांकवाद का प्रलयकारी रूप विश्व के मानसपटल पर हमेशा अंकित रहेगा व अमेरिका के लिए वह विनाशकारी दिन एक सबक की तरह था, कि दूसरों के लिए कुंआ खोदने वाले कभी खुद भी उसमें गिर जाते हैं, ये कहावत अमेरिका पर सही सिद्ध होती है। राष्ट्रपति कैनेडी ने 1961 में कहा था कि इन हथियारों को नष्ट करना ही होगा वरना ये हमें नष्ट कर देंगे एवं यह धरती किसी के जीवित रहने योग्य ही नहीं रह सकेगी। यदि परमाणु युद्ध हुआ तो इस पृथ्वी से मानवता का समूल नाश कर देंगे। यदि यदि युद्ध केवल उतरी गोलार्द्ध में होता है तब भी इसके गंभीर परिणाम सम्पूर्ण विश्व को भुगतने होंगे। विश्व सुरक्षा व शांति के नाम पर विभिन्न प्रकार के हथियारों के ढेर पर बैठा है। यह सही कि उक्त कटौतियों के बावजूद मानव संहार के लिए पर्याप्त परमाणु भण्डार बचे रहेंगे। वर्तमान समय में परमाणु सम्पन्न राष्ट्र निःशस्त्रीकरण को अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक सही कदम मान रहे है, वहीं भारत इस संधि को भेदभाव पूर्ण मान रहा है। भारत का मानना है कि यह संधि न्यायपूर्ण नहीं है। यह योजना तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक इस योजना को पूरी ईमानदारी व वफादारी के साथ न अमल में लाया जाए, इस योजना में कई बाधाएं आ

रही है, जिसमें अनुपात की समस्या मुख्य है। इसमें सभी देशों को अपने शस्त्रों का आनुपातिक रूप कम करना होगा, दूसरा राष्ट्रीय हित व सुरक्षा, राजनीतिक समस्याएं है। जब तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति वैचारिक प्रतियोगिता, संकीर्ण राष्ट्रवाद, स्वार्थपूर्ण राष्ट्रीय हितों की सीमा में बंधी है तो निःशस्त्रीकरण संभव नही है।

संदर्भ

(1) हैंस जे मार्गेथो, अंतर्राष्ट्रीय सम्बंध।
(2) एयर कमोडोर जसजीत सिंह, भारतीय परमाणु शस्त्र, नई दिल्ली।
(3) कल्पना चितरंजन, भारतीय परमाणु शस्त्र, नई दिल्ली।
(4) रियर एडमिरल राजा मेनन, न्यूकिलियर स्ट्राटेजी ऑन इंडिया, नई दिल्ली।
(5) ए. सी. आर. पृ 608, 611
(6) स्ट्राटेजिक एनालाईसिस, आई.डी.एस.ए., नई दिल्ली।
(7) जसजीत सिंह, इंडिया एण्ड द सीटीबीटी, नई दिल्ली।
(8) एलफॉन्सो गासिया रोबलेस, न्यूकिलियर डिस्आरमामेंट, नई दिल्ली। (9) हिन्दुस्तान टाईम्स, नई दिल्ली।
(10) डॉ बी एल फाडिया, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, आगरा।
(11) स्टेटमेंट ऑफ रिपोर्ट
(12) इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैट्जेकि स्ट्डीज रिपोर्ट, नई दिल्ली। (13) मिलिट्री बैलेंस
(14) मनप्रीत सेठी, भारतीय परमाणु शस्त्र, नई दिल्ली।
(15) इन इंडिया एंड डिसआर्मामेंट, नई दिल्ली।